नरि्देशक- राकेश ओम प्रकाश मेहरा□
कलाकार- फरहान अख्तर, सोनम कपूर, योगराज सहि, दवि्या दत्ता, प्रकाश राज, पवन मल्होत्रा□

जब आप जदिगी की अहम दौ□ में जीवन की बाजी लगाकर भाग रहे होते हैं तो स्याह यादें आपका पीछा करती हैं और दौ□ में पछि□ जाते हैं□ ये स्याह यादें कसिी रेस में ब्रेक का भी काम करती हैं□ भारतीय □ थलीट की दुनयिा में कवदिंती बन चुके धावक मल्खिा सहि के साथ 1960 के ओलंपकि में यही हुआ जब वे जीतते-जीतते रह ग□ □ उनकी जदिगी पर बनी फलि्म 'भाग मल्खिा भाग' यही रेखांकति करती है कि दौ□ ना सरि्फ शरीर से नहीं मन से भी होता है□ आहत मन शरीर को रोक देता है□

बेशक यह खेल पर बनी फलि्म है□ लेकनि साथ ही जीवन दर्शन की फलि्म है□ आप कैसे सोचते हैं, सोच को कसि तरह आपके वचिार ढालते हैं, □ क धावक या खलिा□ी को कसि तरह अपने-आप से भी ल□ना प□ता है, 'भाग मल्खिा भाग' इन सबको अपने दायरे में लेती है□ यह □ क सकारात्मक फलि्म तो है ही, इसमें दार्शनकिता का भी पुट है□

मल्खिा सहि का जन्म अवभिाजति भारत के पंजाब के उस हस्सि में हुआ था जो आज पाकस्तिान में है□ भारत वभिाजन की त्रासदी उनके और उनके परविार को भी झेलनी प□ी□ उनके माता-पति और परविार के दूसरे कई सदस्य उस समय की सांप्रदायकि हसिा में मारे ग□ □ जब पूरे परविार को दंगाई मार रहे थे तो बालक मल्खिा को उसके पति ने कहा- भाग मल्खिा भाग□ अपने पडि से भागे मल्खिा को जीवन भर भागना प□ा□ पहले अपनी जान बचाने के ल□, फरि □ क खलिा□ी या धावक बनकर ट्रैक पर□

यह फलि्म जीवनी परक तो है साथ ही घटनाओं की उन करवटों को भी छूती है जसिमें आदमी मानसकि रूप से फंस जाता है और दुवधिाग्रस्त हो जाता है□ फलि्म मल्खिा सहि के पूरे जीवन को समेटती है□ लेकनि वह इस बात पर केंद्रति है कि रोम ओलंपकि में पछि□ जाने के बाद युवा मल्खिा हताशा के अंधेरे कोने में चला जाता है□ उस वक्त भारत के प्रधानमंत्री पंडति जवाहर लाल नेहरू थे और पाकस्तिान के सैन्य शासक थे अयूब खान□ नेहरू की तरफ से दोनों देशों के बीच दोस्ताना रशि्ते कायम करने के मकसद से □ क प्रस्ताव पाकस्तिान को भेजा जाता है जसिे अयूब खान की तरफ से स्वीकार कर लयिा जाता है□ इस संबंध सुधार अभयिान के तहत भारतीय खेलकूद दल को पाकस्तिान जाना है□ नेहरू चाहते हैं कि भारतीय खलिा□ी मल्खिा की अगुआई में पाकस्तिान जा□ लेकनि मल्खिा के दलि में वह जख्म हरा है जसिमें उसके परविार की हत्या हुई थी□ इसल□ मल्खिा का मन वहां जाने का नहीं था□ काफी समझाने के बाद आखरिकार मल्खिा वहां जाते हैं और दौ□ प्रतयिोगति में पाकस्तिानी धावक को हराते भी हैं□ इसी मौके पर अयूब खान ने मल्खिा को 'फ्लाइंग सखि' कहा था जो उनका दूसरा नाम हो गया□

गो कि इसमें पाकस्तिान का जक्रि है लेकनि यह पाकस्तिान वरिोधी फलि्म नहीं है□ हालांकि फलि्मकार के सामने ऐसा करने के ल□ पूरी गुंजाइश थी□ लेकनि इससे बचने की कोशशि की गई है□ फलि्म के आखरिी हस्सि में मल्खिा सहि के बचपन का हदिू दोस्त जो पाकस्तिान में ही रह जाता है का संवाद है- मल्खिा लोग बुरे नहीं होते, हालात बुरे होते हैं□ फरि वह बताता है कि उसकी जान स्कूल के उस मौलवी ने बचाई, जहां वे दोनों प□ते थे□

नरि्देशक ने मल्खिा सहि की जीवनी के माध्यम से □ क ऐसी कहानी कही है जसिमें सरि्फ व्यक्त नहीं बल्कि इतहिास और समाज के कई अक्स भी हैं□ फरहान अख्तर अपनी भूमकि में मल्खिा सहि की जीवटता और उनके मन में चलनेवाले उथलपुथल दोनों को बखूबी पेश करते हैं□ हालांकि उनकी आवाज पतली है जो कुछ लम्हों में भरी-भरी नहीं लगती है□ सोनम कपूर इस फलि्म में हैं लेकनि उनकी भूमकि छोटी है□ मल्खिा की ऐसी प्रेयसी के रूप में, जसिकी अचानक ही शादी हो जाती है और वह इस धावक की जदिगी से दूर चली जाती है□

फलि्म में हास्य के भी कई दृश्य हैं□ जनिमें सबसे मजेदार वह है जसिमें युवा मल्खिा घी के दो डबि्बे सरेआम स□ कपर दंड लगाते हु□ पी लेता है क्योंकि □ क पुलसिवाला उससे खरीदे ग□ घी का बलि मांग रहा है और बलि न मलिने के□ वज में घी का □ क डबि्बा खुद रखना चाहता है□

'पान सहि तोमर' के बाद 'भाग मल्खिा भाग' दूसरी फलि्म है जो □ क धावक के जीवन पर केंद्रति है□ हालांकि दोनों फलि्मों का ट्रीटमेंट अलग है लेकनि वे कहती □ क ही बात हैं- खेल सरि्फ खेल नहीं है वो तो जीवन संग्राम है□ (दवि्यचक्षु)